4th May 2020

चतुर्थः पाठः

कर्मगौरवम्

श्लोकों का अन्वय एवं अनुवाद

(क) बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते,
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥

अन्वयः - इह बुद्धियुक्तः (नरः) सुकृतदुष्कृते उभे जहाति, तस्मात् योगाय युज्यस्व, योगः कर्मसु कौशलम् ॥

अनुवाद - यहाँ में सम-बुद्धियुक्त पुण्य तथा पाप-दोनों को त्याग देता है अर्थात् उनसे मुक्त हो जाता है या छूट जाता है, अतः तुम समत्वरूप योग के लिए प्रयत्न करो या तू समता रूप योग में लगा जा, या समत्वरूप योग कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्मों के बन्धन से मुक्त होने या छूटने का उपाय है।

(ख) नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः,
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥

अन्वयः - त्वम् कर्म नियतम् कुरु, हि अकर्मणः कर्म ज्यायः, ते च शरीरयात्रा अपि अकर्मणः न प्रसिद्ध्येत्।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

अनुवाद- प्रस्तुत श्लोक गीता के तीसरे अध्याय का आठवाँ श्लोक है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि तू शास्त्रविहित कर्तव्य कर्म है, क्योंकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है. कर्म न ~~करने से~~ करने से तेरा शरीरनिर्वाह भी नहीं सिद्ध होगा।

(ग) न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।
न च सन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति॥

अन्वय:- पुरुषः न कर्मणाम् अनारम्भात् नैष्कर्म्यम् अश्नुते,
न च सन्यसनात् एव सिद्धिम् सम्- अधिगच्छति,

अनुवाद- गीता का यह तीसरे अध्याय का चौथा श्लोक है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि मनुष्य न तो कर्मों का आरम्भ किये बिना निष्कर्मता को अर्थात् योगनिष्ठा को प्राप्त होता है तथा न कर्मों के केवल त्यागमात्र से सिद्धि अर्थात् सांख्यनिष्ठा को ही प्राप्त होता है।

P. T. O.

Scanned with CamScanner

(घ) न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्,
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥

अन्वयः - कश्चित् जातु क्षणम् अपि अकर्मकृत् न हि तिष्ठति,
हि सर्वः प्रकृतिजैः गुणैः अवशः कर्म कार्यते,

अनुवाद - गीता का यह तीसरे अध्याय का पाँचवाँ श्लोक है, श्रीकृष्ण का कथन है कि निस्सन्देह कोई भी मनुष्य किसी भी काल में क्षणमात्र भी बिना कर्म किये नहीं रहता, क्योंकि सारा मानव-समाज प्रकृति जनित गुणों के द्वारा परवश हुआ कर्म करने के लिए बाध्य किया जाता है,

(ङ) तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर,
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुषः ॥

अन्वयः - तस्मात् सततम् असक्तः तत्र्यम् कर्म सम्-आचर,
हि असक्तः कर्म आचरन् पूरुषः परम् आप्नोति,

अनुवाद - गीता का यह तीसरे अध्याय का उन्नीसवाँ श्लोक है, श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि इसलिए तू निरन्तर आसक्ति से रहित होकर या अनासक्त होकर सदा कर्तव्य कर्म को भली-भाँति करता रह, क्योंकि आसक्ति से रहित होकर कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

Scanned with CamScanner

(च) कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि॥

अन्वयः - जनक - आदयः कर्मणा एव संसिद्धिम् आस्थिताः।
हि लोकसंग्रहम् एव अपि संपश्यन् कर्तुम् अर्हसि।

अनुवाद - जनक आदि ज्ञानी जन कर्म द्वारा ही परमसिद्धि को प्राप्त हुए थे। लोकसंग्रह को देखते हुए भी कर्म करने के ही योग्य है अर्थात् तुझे कर्म करना ही उचित है।

(घ) यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

अन्वयः - श्रेष्ठः यत् यत् आचरति, इतरः जनः तत् तत् एव।
सः यत् प्रमाणम् कुरुते, लोकः तत् अनुवर्तते।

अनुवाद - प्रस्तुत श्लोक गीता के तीसरे अध्याय का इक्कीसवाँ श्लोक है। श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं - श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण ~~करता~~ करता है, अन्य पुरुष अथवा सब लोग (भी) वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, समस्त मानव-समुदाय उसी के अनुसार बरतने लग जाता है अर्थात् अनुसरण करता है।

P.T.O.

(ज) न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन्॥

अन्वयः - विद्वान् युक्तः अज्ञानाम् कर्मसंगिनाम् बुद्धिभेदम् न जनयेत्, सर्वकर्माणि समाचरन् जोषयेत्।

अनुवाद - यह गीता के तीसरे अध्याय का छब्बीसवाँ श्लोक है, श्रीकृष्ण का अर्जुन के प्रति कथन है कि परमात्मा के रूप में अटल स्थित हुए ज्ञानी पुरुष को चाहिए कि वह शास्त्रविहित कर्मों में आसक्ति वाले अज्ञानियों की बुद्धि में भ्रम अर्थात कर्मों में अश्रद्धा उत्पन्न न करे, स्वयं शास्त्रविहित समस्त कर्म भली-भाँति करता हुआ उनसे भी वैसे ही करवाये।

Scanned with CamScanner

अभ्यासः

(1) संस्कृतभाषया उत्तरत –

(क) अयं पाठः कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलितः?

:

(ख) अकर्मणः किं ज्यायः?

:

(ग) जनकादयः केन सिद्धिम् आस्थिताः?

:

(घ) लोकः कम् अनुवर्तते?

:

(ङ) बुद्धियुक्तः अस्मिन् संसारे के जहाति?

:

(च) केषाम् अनारम्भात् पुरुषः नैष्कर्म्यं प्राप्नोति?

:

P.T.O.

(5.) अधोलिखितानां शब्दानां विलोमान्

यथा :- वशः — अवशः

(क) बुद्धिहीनः —

(ख) दुष्कृतम् —

(ग) अकौशलम् —

(घ) न्यूनः —

(ङ) कर्मणः —

(च) दुर्गुणैः —

(छ) कदाचित् —

(ज) निकृष्टः —

(6.) अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां विभक्तीनां निर्देशं कुरुत —

(क) योगः कर्मसु कौशलम् ।

(ख) जीवने नियतं कर्म कुरु ।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

Date ________
Page ________

(ग) कर्मणा एव जनकादयः संसिद्धिम् आस्थिताः।

०

(घ) अकर्मणः कर्म ज्यायः।

०

(ङ) कर्मणाम् अनारम्भात् पुरुषः नैष्कर्म्यं न अश्नुते।

०

(8) समानार्थकपदानि

अनारतम्, मनीषा, गात्रम्, दुष्कर्म, प्राज्ञः, कलुषम्, शेमुषी, अविरतम्, कोविदः, कायः, मतिः, पातकम्, देहः, मनीषी, अश्रान्तम्।

(क) विद्वान् ________ ________ ________

(ख) शरीरम् ________ ________ ________

(ग) बुद्धिः ________ ________ ________

(घ) सततम् ________ ________ ________

(ङ) दुष्कृतम् ________ ________ ________

(10) पाठे प्रयुक्तस्य छन्दसः नाम लिखत–

०

P.T.O

Scanned with CamScanner